© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उपनिषदों में निहित विश्व–बन्धुत्व की भावना

डॉ मधु शुक्ला

संस्कृत विभाग,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

वैदिक साहित्य में 'विश' शब्द का प्रयोग सर्वजन, जनसामान्य या प्रजा के अर्थ में हुआ हैं, यथा–'राष्ट्राणि वै विशः अतः सर्व, सकल, समग्र बहुत्व या भूमा ही वैश्वीकरण का मूल भाव एवं साध्य हैं।

वैश्वीकरण या वैश्विक शब्द एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसका प्रथम आयाम भौगोलिक या दैशिक है, अर्थात् भिन्न–भिन्न देशों की भौतिक दूरियों को समाप्त कर सभी को सबके लिये सुगम, सुलभ बना देना। यह तभी संभव है, जब पृथ्वी के सभी राष्ट्रों में परस्पर बंधुत्व या आत्मीय सम्बन्ध हों।

वर्तमान युग में हम भारतीय उपनिषदों के माध्यम से समाज में एकता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना ला सकते हैं, परन्तु आज समाज में इतनी विषमता आ गई हैं, जिसके कारण समाज में समरसता लाना बहुत मुश्किल हो गया है, परन्तु ऐसा नहीं है। यदि विज्ञान के साथ–साथ व्यक्तियों में आध्यात्मिक ज्ञान विकसित हो जाये, तो समाज में जातिवाद, भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियों, अव्यवस्थित लोकतंत्र, आतंकवाद, व्यभिचर का अंत हो जायें। यह तभी सम्भव है, जब हम भारतीय उपनिषद् की विचारधारा को अपने मानस पटल पर बिठा लें। जब तक हमारी भावनाओं, हमारे व्यवहार, हमारे संस्कार, हमारी भाषा, हमारे विचार और हमारी आत्मा में यहाँ तक कि संसार के प्रत्येक वस्तु, प्राणी, जड़, चेतन प्रकृति आदि सभी पर भारतीय उपनिषद् की धाराओं का चिन्तन विराजमान होगा, तभी तो हम सबको समाज के प्रति सकारात्मक कार्य करने को मिलेगा, उस कार्य को हम अपना कर्म समझकर, कर्म को कर्तव्य और पूजा मानकर ठीक प्रकार से सम्पन्न करेगें, जिससे हम सब के बीच एक नवीन चिन्तन, एक नवीन ऊर्जा सम्पन्न होगा, और हमारे अन्दर उस नवीन चिन्तन और ऊर्जा से सकारात्मक कार्य और सकारात्मक कार्य से

हमारे समाज, समाज में रहने वाले प्राणी, जीव सभी का हमारे विश्व का, विश्व के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी पक्षों का सतत और समुचित विकास होगा, जिससे हमारे समाज अर्थात् विश्व समुदाय का कोई भी व्यक्ति साथ ही साथ किसी भी प्रकार का जीव भूखा नहीं रहेगा। समस्त चेतन प्राणी को भरपेट भोजन, रहने के लिये घर मिलेगा। उस समय हमारी भारत माता की जय होगी और विश्व के प्रत्येक प्राणी एक–दूसरे के प्रति बड़ी ईमानदारी के साथ एक–दूसरे का साथ निभायेंगे, लेकिन हमारे समाज में नैतिकता का अभाव होने के कारण ही सामाजिक विषमता है, जिसके परिणामस्वरूप किसी के पास इतनी दौलत हैं कि उसका पता नहीं और किसी के पास इतना भी पैसा नहीं है कि सामान्य भोजन और रहने की व्यवस्था कर सके, और रहने की व्यवस्था कर सकें, क्योंकि हमारा देश जाति, धर्म, सम्प्रदाय विशेषकर भ्रष्टाचार से बोझिल हो गया है, अधिक से अधिक व्यक्ति कर्मों में भाग रहे हैं। जिसके कारण हमारी धरती माँ अपने पुत्र–पुत्रियों सहित बहुत दुःखी है और आज हमारे समाज बिखर रहा है क्योंकि समाज समाज में जातिवाद, क्षेत्रवाद, व्यभिचार, अंधविश्वास, कुरीतियों विशेषकर भ्रष्टाचार इतना है कि समाज जाति, धर्म, रूप, रंग आदि भेद के कारण आपस में ही लड़ रहा है। हम सबको चाहिये जब हम सब एक ही भारत माता की संतान है। हम सबको चाहियेजब हम सब को आपस में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, रूप, रंग भेद को अपने मानस पटल से निकाल अपनी भारत माता अर्थात् समूचे समाज की अपनी–अपनी मानसिक शारीरिक, आर्थिक शक्ति के अनुसार तन–मन–धन से सेवा करनी चाहिए। भारतीय दार्शनिक चिन्तन तो हमें प्रतिक्षण श्रेष्ठ मानव बनाने को तैयार है।

अथर्ववेद में भी सामाजिक एवं पारिवारिक सद्भावना का चिन्तन किया गया है–

''मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमृत स्वसा।[2]
सम्यंच सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।'' (अथर्ववेद)

अर्थात् भाई–भाई से द्वेष न करे, नहीं कोई बहिन–बहिन से द्वेष करे। सभी आचरण करते हुये, सदाचार व्रत का पालन करते हुये आपस में कल्याणकारी बोली बोले। इस मंत्र के संदर्भ में कबीर ने भी अपनी सच्ची सद्भावना समाज के ामने रखी है। **''ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को शीतल करै' आपहु शीतल होय।''[3]** (ग्रन्थावली)

समस्त जगत में जड़–चेतन प्राणी में परमात्मा का निवास है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति (मानव) और जीव बिना परमात्मा के चल फिर नहीं सकता। ईशावास्योपनिषद् में भी सामाजिक–समरसता का बड़ी सहजता के साथ वर्णन है–

''यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति।4

सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।'' (ईशावासोपनिषद् 06)

अर्थात् जब समस्त प्राणी (मानव और जीव) परमात्मा से युक्त है और समस्त प्राणियों (मानव और जीव) में परमात्मा है, जब मानव को एक–दूसरे प्राणियों (संसार का चाहे जिस जाति धर्म को व्यक्ति तथा चाहे जिस प्रकार जीव हो) से घृणा नहीं करना चाहिए।

''यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अनुपश्यति।[5]

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।। (ईशा0 7)

अर्थात् जो व्यक्ति समस्त प्राणि (संसार को चाहे जिस जाति, धर्म का व्यक्ति तथा चाहे जिस प्रकार का जीव) में परमात्मा को ही देखता है। ऐसे समस्त प्राणी में मात्र एक ही परमात्मा को देखने वाले महापुरुष को कौन सा शोक और मोह? अर्थात् संसार के समस्त मानव और जीव में परमात्मा को देखने वाला महापुरुष के अन्दर मोह, शोक नहीं रह जाता है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।6

तेन व्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

अर्थात् इस जगत जो कुछ भी जड़–चेतन प्राणी (पेड़–पौधों, नही पहाड़ विभिन्न जाति के मानव और जीव) है, वह सब परमेश्वर युक्त है अर्थात् संसार के प्रत्येक जीव एवं मानव में परमात्मा का वास है। इसलिए हे मानव! जो आपको घर, द्वार, जमीन, पुत्र परिवार आदि मिला है) यह मत समझों कि यह सब हमारा है बल्कि यह हम सबका अर्थात् परमात्मा का है, इसलिए व्याग करते हुए उपभोग करो, यह धन दौलत किसी का नहीं है। महाकवि कालिदास ने भी पूरे विश्व को सामाजिक एकता के सूत्र में बाँधते हुए कहते हैं। 'वागर्थविव सम्पृक्तौवागार्थ प्रतिपत्तयै। जत पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।'' (रघुवंश 2/1)।[7] अर्थात् जिस प्रकार शब्द और अर्थ आपस में मिले हुए हैं ठीक उसी प्रकार शब्द और अर्थ की भाँति प्रतीत होने वाले जगत् के माता–पिता, शंकर और पार्वती को मै। प्रणाम करता हूँ। कहने का भाव यह है कि भले ही शब्द और अर्थ बाह्यरूप से अलग–अलग है लेकिन आन्तरिक रूप से शब्द और अर्थ एक ही है। इसी प्रकार

समुद्र का पानी अलग दिखाई पड़ता है। और समुद्र में उठने वाली लहरों का पानी अलग दिखाई पड़ता परन्तु वह है तो समुद्र का पानी ही। ठीक उसी प्रकार सूर्य की किरणें जब शीपी में पड़ता है मोती नजर आता है, जब मरीचिका पर पड़ता है, तो रजत के समान दिखाई पड़ता है पर वह है तो सूर्य की किरण ही। सामाजिक मनुष्य इस जगत् में भिन्न–भिन्न, वेषभूषा, चाल–चलन, पहनावा, रीति– रिवाज, संस्कारों आदि से भिन्न होते हुए एक ही प्रतीत होता हैं। और इसी प्रकार आप जो कि एक फल है, उसमें रस, छिलका, गुठली सभी चीज अलग–अलग है परन्तु सम्पूर्ण रूप से देखे तो वह एक आम रूपी फल है। इस जगत में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध अनेक धर्म के लोग है, परन्तु उनके शरीर की जो आत्मा है, और जो रूधिर वाहिनियों में बहने वाला रूधिर वह सब कुछ एक है इस जगत में एक है। इस जगत में पादप, पुष्प, विट इत्यादि अनेक प्रकार के हैं जैसे कोई वृक्ष्ज्ञ कोई आम का है, कोई अमरूद का है, कोई कटहल का है परन्तु तीनों एक ही वृक्ष के रूप ही हैं। हम सब बाह्यरूप में अनेक हैं लेकिन आन्तरिक दृष्टिकोण से एक ही परमात्मा के पुत्र और पुत्री है। इस प्रकार जब धरा, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा एक है तो समझो परमात्मा भी एक है। इसलिए हम सब भी एक है। अतएव हम कह सकते हैं कि भारतीय उपनिषदों में प्रबल विश्वबन्धुत्व की भावना निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐतरेय ब्राह्मण 8/26
2. अथर्ववेद का कथन
3. कबीर ग्रन्थावली
4. ईशावास्योपनिषद् 6 मंत्र
5. ईशावास्योपनिषद् 7 मंत्र
6. ईशावास्योपनिषद् 1 मंत्र
7. रघुवंश महाकाव्य–2/1